VISION IAS

www.visionias.in

SUBJECT:	Essay	Test Code:	1	4	5	8	
Name of Candidate	Mohan Lal						
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	3	5	6	4	1	5
Center		Date	0	5	1	2	2	0

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

16-B, 2nd Floor, Above National Trust Building, Bada Bazar Marg, Old Rajinder Nagar, Delhi-110060

Plot No. 857, 1st Floor, Banda Bahadur Marg (Opp. Punjab & Sindh Bank), Dr. Mukherjee Nagar, Delhi- 110009

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ भी लिखें)

'Section A'

"क्या हम वि-वैश्वीकरण के युग में प्रवेश कर रहे हैं?"

हाल ही के वर्षों में संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विकसित देशों ने चीन के करीब $200 बिलियन के उत्पादों पर आयात शुल्क को 25% तक बढा दिया गया था वहीं दूसरी तरफ चीन द्वारा भी प्रत्युत्तर में $100 बिलियन से अधिक अमेरिकी उत्पादों पर आयात शुल्क को बढा दिया गया था। इसी प्रकार हाल ही में आई COVID-19 वैश्विक महामारी से अंतर्राष्ट्रीय यात्रागमन व परिवहन पर प्रतिबंध भी यह आशंका जताता है कि क्या हम वि-वैश्वीकरण के युग में प्रवेश कर रहे हैं?

इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए इस निबंध में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि वि-वैश्वीकरण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की अवधारणा क्या है? यह किस प्रकार से वैश्वीकरण की प्रक्रिया के विपरीत है? क्या वर्तमान में ऐसी संभावना दिखती है कि वि-वैश्वीकरण युग की शुरुआत हो सकती है? वि-वैश्वीकरण किन-किन चिंताओं को जन्म देगा, इसके क्या सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, पर्यावरणीय, अंतर्राष्ट्रीय तथा मनोवैज्ञानिक एवं वैचारिक प्रभाव होंगे? क्या इसमें लाभ के निहितार्थ भी हैं तथा इस हेतु हम अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की प्रासंगिकता की भी चर्चा करेंगे।

वि-वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें <u>अंतर्देशीय संबंध</u>, (एक देश का दूसरे देशों के साथ) <u>अंतर्निर्भरता</u> जैसे गुणों का अनुपस्थित होना है। हालांकि पूर्ण रूप से वि-वैश्वीकरण का सिद्धांत वर्तमान परिदृश्य में <u>गैर-प्रासंगिक</u> है। इसके अंतर्गत विभिन्न आर्थिक कदम जैसे- आयात प्रतिबंध, सामाजिक कदम जैसे- <u>आप्रवासन पर प्रतिबंध</u>, राजनीतिक

Don't write anything this margin (इस क्षेत्र में कुछ न लिखें)

कदम जैसे - परस्पर सद्भावपूर्ण संस्था का अभाव, सांस्कृतिक कदम जैसे - पर्यटन पर रोक इत्यादि शामिल हैं।

ऐतिहासिक संदर्भ में बात करें तो प्राचीन भारत अधिकतर आत्मनिर्भर था, परन्तु वैश्विक देशों के साथ व्यापार यथा - ग्रीक-रोमन, दक्षिण पूर्वी एशिया के साथ अपने चरम स्तर था। जैसे - मुजिरिस, मुसलीपत्तनम् जैसे पोर्ट इसके साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

हालांकि आधुनिक विश्व में औद्योगिकीकरण के पश्चात् वैश्वीकरण के आधुनिक स्वरूप ने नई पहचान बनाई जिसमें नागरिकों का अंतर्प्रवसन तथा आवासन एक नई अवधारणा थी। साम्राज्यवादी पूँजीवाद ने इसको त्वरता तथा आवृत्ति दोनों में वृद्धि की। भारतीय परिप्रेक्ष्य में बात करें तो आर्थिक वैश्वीकरण की शुरुआत को प्रत्यक्ष रूप से 1991 के आर्थिक सुधारों में भी देखा जा सकता है।

anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस संदर्भ में वर्तमान भू-राजनीतिक परिदृश्य में वि-वैश्वीकरण की शुरूआत के कुछ उदाहरण निम्न हैं- विकासित राष्ट्रों द्वारा विकासशील राष्ट्रों के प्रति संरक्षणवादी प्रवृति को अपनाना। जैसे- अमेरिका-चीन ट्रेड वार, अमेरिका की H1b वीजा प्रणाली को अधिक कठोर बनाना, यूरोप द्वारा भारतीय उत्पादों पर NTB (नॉन-टैरिफ बेरियर्स) आरोपित करना, इस्लामोफोबिया तथा इस्लामिक कट्टरवाद एवं ~~अन्य~~ आतंकवाद।

उपरोक्त उदाहरणों के अंतर्गत विश्व के विभिन्न देशों द्वारा अपनायी जाने वाली नीतियाँ वि-वैश्वीकरण युग में प्रवेश की ओर संकेतन को दर्शाता हैं। जैसे- हाल ही में कतर द्वारा भारतीय डायस्पोरा के रूप में आप्रवासियों की संख्या को सीमित करने हेतु विधिक अधिनियम पारित करना हो या परोक्ष रूप से अमेरिका द्वारा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ भी लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ भी लिखें)

अफगानिस्तान से अपने बलों की वापसी है।

हाल में कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी ने इस चिंता को और अधिक गहरा कर दिया है कि क्या हम वि-वैश्वीकरण की ओर तो कदम नहीं रख रहे हैं। जैसे- लगभग सभी देशों द्वारा विदेशी नागरिकों के आगमन पर प्रतिबंध, सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों पर रोक इत्यादि।

इस प्रकार विभिन्न आपदाओं खासकर जैविक (जैसे COVID-19) के प्रति सभी देशों (विकसित एवं विकासशील) की सुभेद्यता को बढ़ाता है, जिसके फलस्वरूप विभिन्न वैश्विक प्रतिबंधों के कारण हम वि-वैश्वीकरण की ओर कदम रख सकते हैं।

हालांकि वि-वैश्वीकरण वर्तमान युग में संभावनाओं को कम तथा चुनौतियों को अधिक जन्म देगा। विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित निम्न प्रकार की

चुनौतियाँ विद्यमान हैं -

आर्थिक आयाम के रूप में वि-वैश्वीकरण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। वैश्विक GDP (सकल घरेलू उत्पाद) के कमी, आयात व निर्यात में कमी, रोजगार हानि, तकनीकी तथा नवाचारों के प्रसार एवं अनुसंधान एवं विकास में कमी, प्रति व्यक्ति निम्न आय, निर्धनता आदि को जन्म देगी।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में वि-वैश्वीकरण अंतर्राष्ट्रीय आवागमन को प्रभावित करेगा जिससे सामाजिक संपर्कता में कमी आयेगी, फलस्वरूप सामाजिक संबंधों में अधिक अनिश्चितता उत्पन्न होगी क्योंकि वैश्वीकरण से वि-वैश्वीकरण की प्रक्रिया संघर्ष को जन्म दे सकती है। जैसे - भारत के संदर्भ में वि-वैश्वीकरण आसियान देशों के साथ सामाजिक कनेक्टिविटी को प्रभावित करेगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

राजनीतिक स्तर से वि-वैश्वीकरण भू-राजनीति को वैश्विक स्तर पर प्रभावित करेगा, जिससे अंतर्देशीय संघर्षों व युद्धों की संभावना बढ़ेगी एवं न्यूक्लियर युग में अशांति एवं अस्थिरता एवं अराजकता को जन्म दे सकता है।

पर्यावरणीय स्तर पर वि-वैश्वीकरण के सर्वाधिक दुष्प्रभाव होंगे। यह कार्बन उत्सर्जन की सभी वार्तालापों को समाप्त कर सकता है। जैसे- UNFCCC के अंतर्गत पेरिस समझौता, ओजोन क्षरण अवनमन हेतु मोन्ट्रियल प्रोटोकॉल जिसे सर्वाधिक सफल समझौता माना जाता है, इत्यादि के समापन से वैश्विक स्तर पर CO_2 उत्सर्जन और अधिक होगा। जैसा कि IPCC ने अपनी रिपोर्ट में बताया- 2100 वीं सदी तक 2-66% तक पर्माफ्रॉस्ट एवं क्रायोस्फीयर की समाप्ति; प्रति वर्ष 9 mm

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

से अधिक समुद्री जल स्तर में वृद्धि, 3-4°C वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि इत्यादि, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावास हानि, जैव-विविधता हानि, प्रवाल विरंजन, अम्लीकरण जैसी चिंताएं और अधिक बढ़ेगी जो अंततः मनुष्य स्वंय को अस्तित्वहीन बना सकती है।

मनोवैज्ञानिक रूप से वि-वैश्वीकरण मानसिक पीड़ा, अवसाद, भय (युद्ध के कारण), सद्भावहीन भावना इत्यादि को जन्म देगा जिससे व्यक्ति की IQ के साथ EQ (इमोशनल इंटेलीजेंस) क्षमता का क्षरण हो सकता है।

इस प्रकार वि-वैश्वीकरण अनेक प्रकार की चुनौतियों को जन्म दे सकता है परन्तु इसके कुछ लाभ भी हैं -

→ जैसे - अगर वि-वैश्वीकरण की प्रक्रिया अधिक सशक्त होती तो

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

COVID-19 का संक्रमण वैश्विक स्तर पर नहीं फैल पाता एवं वि-वैश्वीकरण एक समय विलंबन प्रक्रिया होने के कारण आपदा पूर्व चरण के दौरान तैयारी, अनुक्रिया, शमन आदि हेतु प्रभावी कदम उठाने की सूचना प्राप्त हो पाती।

→ वि-वैश्वीकरण राष्ट्रवाद की आधुनिक प्रक्रिया को भी जन्म दे सकता है। जैसे- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इस प्रवृत्ति को देखा गया था।

वि-वैश्वीकरण की ओर कदम रखने के अन्य कारणों पर चर्चा करें तो अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की अदक्षता व अदूरदर्शिता का महत्वपूर्ण स्थान है।

जैसे- WTO (विश्व व्यापार संगठन) द्वारा पक्षपातपूर्ण निर्णय तथा वैश्विक विकासित देशों की प्रभाविता के कारण संरक्षणवाद को रोकने में असफलता,

UNSC (संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद) का असंतुलन प्रतिनिधित्व जैसे - इसमें द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत परिस्थितिनुरूप प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया जबकि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य बदल चुका है, आतंकवाद पर प्रभावी असहमति के कारण अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय का न होना, पर्यावरणीय प्रतिबद्धता से पाश्चिमी देशों का पीछे हटना इत्यादि। हाल ही में WHO (विश्व स्वास्थ्य संगठन) के राजनीतिकरण ने भी चिंता को और अधिक बढ़ाया है।

इन सभी चिंताओं के गहन अध्ययन से यह तो बात है कि वि-वैश्वीकरण वैश्विक संधारणीयता, अशांति, अस्थायित्व, असंतुलन, युद्धों की प्रवृत्ति बढ़ना इत्यादि को जन्म देगी।

अतः वि-वैश्वीकरण की ओर कदम न रखने हेतु अंतर्राष्ट्रीय स्तर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

पर बहुपक्षवाद (मल्टीलैटेरिज्म), वैश्विक संस्थानों यथा- WTO, UNSC, WHO इत्यादि में पक्षपातरहित न्याय-निर्णयन एवं प्रतिनिधित्व, संधारणीय विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति ओर हेतु सभी राजनीतिक सरकारों को प्रयास करना चाहिए। एक वैश्विक संस्था का निर्माण करना चाहिए जो वर्तमान प्रासंगिकता के अनुरूप हो, जिससे वैश्विक स्तर पर सहिष्णुता, सर्वधर्म सद्भाव, सामाजिक - आर्थिक - राजनीतिक न्याय सुनिश्चित हो सके।

किसी ने ठीक कहा है-

कौन कहता है आसमान में सुराख नहीं होता।
एक पत्थर तो ज़रा नीयत से उछालो यारों॥

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

'Section B'

" 21वीं सदी में जल प्रबंधन की चुनौतियाँ "

करीब दो वर्ष पूर्व दक्षिण अफ्रीका की राजधानी केपटाउन में अत्यधिक जल संकट ने वहाँ सभी वर्गों चाहे अमीर हो या गरीब, को पेयजल हेतु भी आपूर्ति न होने के कारण अत्यधिक अस्थिरता को जन्म दिया तो वहीं दूसरी तरफ भारत के थार मरुस्थल की बात करें तो जल महत्व एवं प्रबंधन की आवश्यकता स्वतः ही समझ आ जाती है।

नीति आयोग द्वारा CWMI (कंपोजिट जल प्रबंधन सूचकांक) 2019 के तहत 2030 तक भारत में प्रति व्यक्ति 1000 cc^3 से भी कम प्रतिवर्ष पानी की उपलब्धता होगी एवं वर्तमान में ग्रामीण भारत में जहाँ करीब 70% जनसंख्या निवास करती है, के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

75% से अधिक घरों के परिसर में पेयजल का अभाव है। केन्द्रीय भू-जल आयोग (CWC) के अनुसार दो तिहाई से अधिक क्षेत्रों में भूजल स्तर औसत से अधिक गिर गया है। एवं CPCB (केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड) के अनुसार 215 से अधिक नदियाँ भी प्रदूषित हो चुकी है।

उपरोक्त तथ्य यह दर्शाते हैं कि 21वीं सदी में जल की उपलब्धता क्या हैं, तथा इसका क्या महत्व हैं।

अब हम चर्चा करेंगे कि आखिर जल प्रबंधन क्या है? इसका क्या महत्व हैं, यह किस प्रकार सामाजिक परिवेश को प्रभावित करता हैं, इसके क्या-क्या आयाम है, विभिन्न जल प्रबंधन हेतु क्या-क्या पारंपरिक तथा आधुनिक दृष्टिकोण है, इसके समक्ष क्या-क्या चुनौतियाँ है, इन चुनौतियों का क्या कोई आर्थिक, राजनीतिक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सामाजिक एवं पर्यावरणीय आधार हैं, यह क्यों महत्वपूर्ण है, इसकी अंतर्राष्ट्रीय प्राप्तिति, लाभों आदि का अध्ययन करने का प्रयास करेंगे।

जल प्रबंधन का तात्पर्य

जल के दक्षतापूर्वक, कुशलतापूर्वक उपयोग करने से है, जहाँ अपव्यय न हो तथा संधारणीय जल उपलब्धता निरंतर बनी रहे। वर्तमान उपयोग के अतिरिक्त भावी पीढ़ियों हेतु जल उपलब्धता सुनिश्चित करना संधारणीय जल प्रबंधन कहलाता है।

चूंकि जलीय चक्र द्वारा जल की आपूर्ति निरंतर बनी रहती है लेकिन मानव-जनित जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसमी स्थितियों ने सूखा एवं बाढ़ जैसी घटनाओं की आवृत्ति एवं तीव्रता को अत्याधिक बढ़ा दिया है। हम जानते हैं कि कुल वैश्विक उपलब्ध जल का मात्र 3% से

Don't write anything in this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कम ही स्वच्छ जल है, उसका भी दो-तिहाई से अधिक ग्लेशियर के रूप में जमा है। भारत के संदर्भ में बात करें तो कुल उपलब्ध जल का करीब 80% से अधिक उपयोग केवल कृषि कार्यों हेतु होता है। अतः उपरोक्त प्रतीति को देखते हुए 21वीं सदी में जल प्रबंधन अतिआवश्यक हो गया है। किसी ने ठीक कहा है कि "जल है तो कल है"।

हालांकि जीवन के आधार के रूप में जल को जीवन संज्ञा दी गई है परन्तु वर्तमान में जल प्रबंधन एक प्रमुख वैश्विक, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय चुनौती बनी हुई है।

वैश्विक स्तर पर जल प्रबंधन संबंधित चुनौती में निम्न तत्व शामिल है -

- पार देशीय नदी प्रणालियों में उच्चतर क्षेत्र वाले देशों का गैर-तार्किकीपूर्ण जल का उपयोग।

Don't write anything this margin (इस मार्जिन में कुछ न लिखें)

जैसे- चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी संबंधित डाटा न देना या विलंबन करना, मेकांग नदी में पारिस्थितिकी प्रवाह (e-प्रवाह) अनिश्चितता को बढ़ाना।

• परस्पर सामंजस्य एवं समन्वय का अभाव है जिसके फलस्वरूप जल प्रबंधन की समस्या उत्पन्न होती है। जैसे हाल ही में इथोपिया तथा सूडान के बीच बांध निर्माण एवं जल विद्युत परियोजना संबंधी चिंताएं।

• प्रभावी जल प्रबंधन अभिसमय का न होना। उदाहरण के तौर पर ओजोन क्षरण रोकने हेतु मोन्ट्रेअल प्रोटोकॉल सर्वाधिक सफल रहा है, इसी तर्ज पर जल प्रबंधन अभिसमय का न होना जो बाध्यकारी हो।

राष्ट्रीय स्तर पर जल प्रबंधन चुनौतियां के अंतर्गत विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आयाम सम्मिलित हैं।

सामाजिक रूप से जल को

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ भी लिखें)

हमेशा एक सार्वजनिक वस्तु (पब्लिक गुड) माना गया है एवं जल को एक नैसर्गिक अधिकार माना गया है। अतः निम्न सामाजिक जागरूकता एवं शिक्षा जल अपव्यय को बढ़ाता है।

आर्थिक रूप से प्रमुख चुनौती जल प्रबंधन में आने वाली लागत से है। भारत जैसे विकासशील देश जिनके पास सीमित संसाधन हैं एवं निर्धनता का उच्च स्तर है, के लिए जल प्रबंधन पर उच्च निवेश व तकनीकी विशेषज्ञता प्राप्त करना कठिन है।

राजनीतिक रूप से प्रमुख चुनौतियाँ राजनीतिक उदासीनता है। कुछ संवेदनशील मुद्दे (भारत के संदर्भ में) जैसे - जल राज्य सूची का विषय है, परन्तु नदी विवादों के समाधान हेतु विधि का निर्माण संसद द्वारा अनुच्छेद 262

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ मत लिखें)

के तहत किया जाता है।

अंतर्राज्यीय विवाद जैसे - कावेरी जल विवाद, (तमिलनाडु, कर्नाटक, पुडुचेरी) रावी नदी जल विवाद, नर्मदा नदी जल विवाद (गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश) आदि के कारण अंतर्राज्यीय स्तर पर जल प्रबंधन हेतु समन्वय एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है।

<u>सांस्कृतिक रूप से</u> चुनौतियाँ निम्न है- विभिन्न नदी प्रणालियों जैसे- गंगा नदी में स्नान करने एवं पदार्थों का उत्सर्जन आदि से पारिस्थितिकी प्रभावों के कारण भी जल प्रबंधन समस्या उत्पन्न हो जाती है।

इसके अतिरिक्त व्यवहारात्मक बदलाव की कमी, औद्योगिक एवं शहरी अपशिष्ट इत्यादि जल प्रबंधन के रूप में प्रमुख चुनौती के रूप में विद्यमान हैं।

इन सभी जल प्रबंधन संबंधित चुनौतियों के समाधान हेतु कई विभिन्न

तकनीकी भी विद्यमान हैं जो 21वीं सदी की जल प्रबंधन संबंधित समस्याओं के निपटान हेतु सहायक है।

जैसे- कृषि क्षेत्र में जल प्रबंधन, कुशल एवं दक्षतापूर्वक उपयोग हेतु स्प्रिंकलर प्रणाली, फव्वारा पद्धति, बूंद - बूंद सिंचाई पद्धति जैसी सूक्ष्म सिंचाई पद्धतियाँ। औद्योगिक क्षेत्रों में ताप-विद्युत संयंत्रों हेतु शीतलक का उपयोग ताकि जलीय- तापीय प्रदूषण नियंत्रित हो।

इस संदर्भ में जल प्रबंधन महत्ता बढ़ाने हेतु वैश्विक स्तर पर निम्न प्रयास किए गए हैं-

सांस्कृतिक एवं राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रसंविदा (ICCPR), आर्थिक एवं सामाजिक अधिकारों हेतु अंतर्राष्ट्रीय प्रसंविदा (ICESR), IPCC (इन्टरगवर्नमेंटल पेनल ऑन क्लाइमेट चेंज) की रिपोर्ट के आधार पर जल

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रबंधन को UNFCCC के अंतर्गत शामिल करना आदि।

भारत सरकार द्वारा जल प्रबंधन हेतु निम्न प्रयास किए गए है :-

जल जीवन मिशन जिसके द्वारा प्रत्येक ग्रामीण परिवार को 2024 तक नल से जल की आपूर्ति, कस्टम हायरिंग सेंटर (CHC) द्वारा यांत्रिक उपकरणों पर छूट जो मृदा में निक्षालन कम करने एवं जल दक्षता बढाने हेतु सहायक है, PMKSY (प्रधानमंत्री पारंपरिक कृषि सिंचाई योजना), प्रति बूंद अधिक उपज, अटल भू जल योजना, शहरी नगरपालिका अपशिष्ट का ग्रे-वाटर में पुर्नचक्रण हेतु योजना, स्मार्ट सिटी मिशन, PM-KUSUM जैसी अनेक योजनाएं है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जल प्रबंधन को बढाता है।

इस संबंध में राजस्थान राज्य की जल स्वावलंबी योजना मॉडल के रूप में भी विख्यात है।

Don't write anything in the margin (इस भाग में कुछ मत लिखें)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जल संधारणीयता, कुशलता, दक्षता सहित प्रबंधन वर्तमान 21वीं सदी की आवश्यकताओं में से प्रमुख है। जल प्रबंधन सामाजिक समरसता तथा स्थायित्व को बढ़ाता है जिससे आर्थिक स्तर पर भी जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि होती है। जल प्रबंधन संधारणीय विकास लक्ष्यों (SDGs) की समग्र प्राप्ति जैसे- स्वच्छ जल, भूमि के नीचे (समुद्र के अन्दर जैव- विविधता संरक्षण), जमीन पर पारिस्थितिकी संरक्षण जैसे SDGs हेतु आवश्यक एवं अपरिहार्य है।

इस संबंध में भारत अपने वर्चुअल जल व्यापार (इसमें उत्पाद निर्माण में प्रयुक्त जल) को युक्तिसंगत कर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 (NEP) में जल शिक्षा अनिवार्य बनाकर एवं प्रभावी जल प्रबंधन तकनीकों में निवेश बढ़ाकर, R&D (अनुसंधान एवं विकास)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यय बढ़ाकर, जागरूकता इत्यादि द्वारा सामाजिक बदलाव जो व्यवहारात्मक हो जल प्रबंधन को अधिक विस्तारित कर सकता है। जिस प्रकार से स्वच्छ भारत मिशन द्वारा ODF (खुले में शौच मुक्त) के लिए सामाजिक व्यवहार में बदलाव की ओर अग्रसर हुआ, उसी तरह जल अपव्यय कम करना एवं जल प्रबंधन लाभों संबंधित संदेश प्रचारों एवं जागरूकता द्वारा जल प्रबंधन मिशन एक सराहनीय कदम हो सकता है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

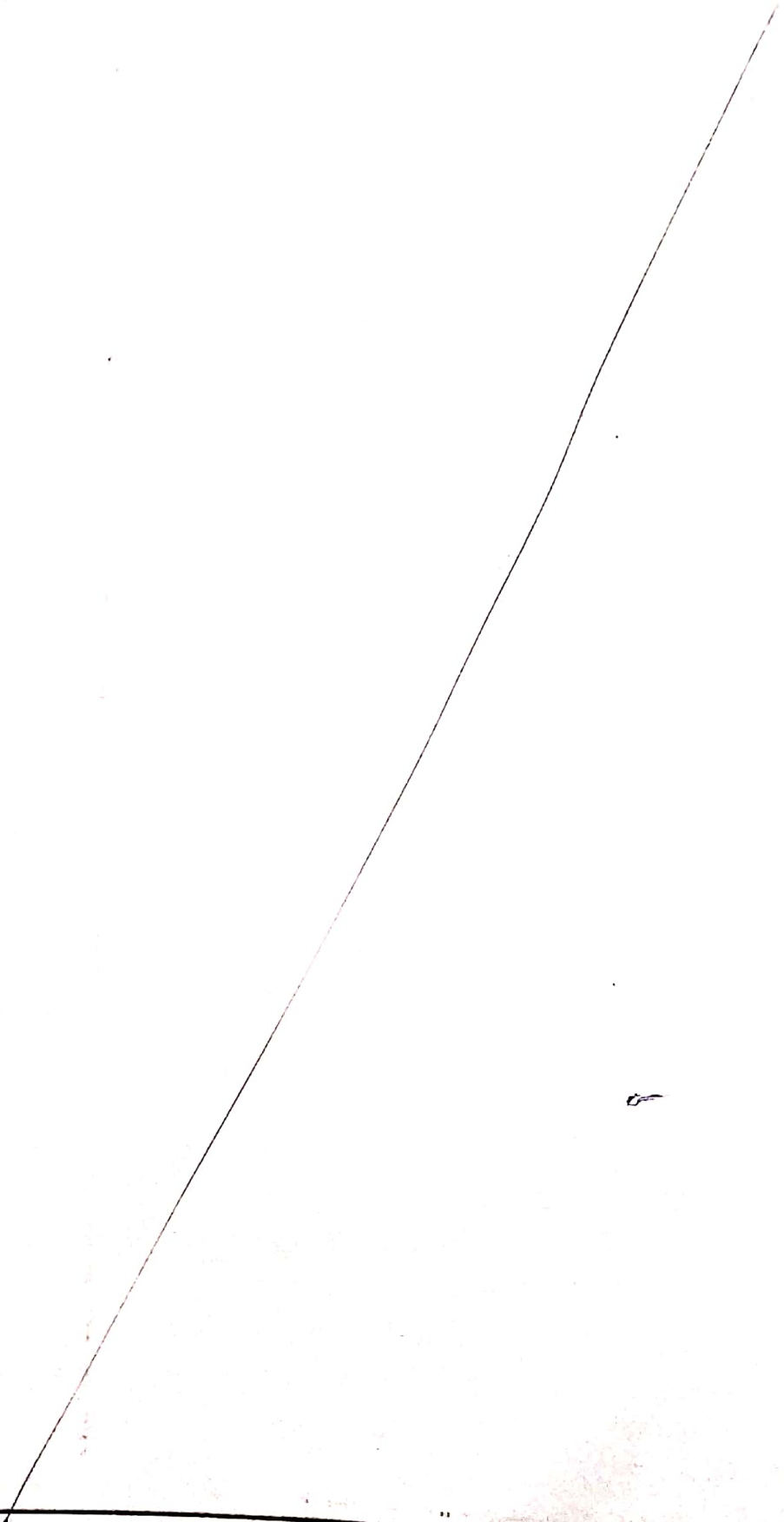

Don't write anything this margin
(कृपया हाशिए में कुछ न लिखें)

(इस भाग में कुछ भी लिखें)

B → 21वीं सदी में जल प्रबंधन की चुनौतियाँ

[illegible]

जलउपयोग 80%

[illegible] CWMI के [illegible]

हाल ही के [illegible]

[illegible] 36% [illegible]

CWC के [illegible], CPCB के [illegible]

[illegible] का level [illegible]

2040 तक 40% [illegible]

[illegible]

[illegible] 3 जल [illegible]

[illegible]

[illegible] इत्यादि

→ [illegible]

M - [illegible]

[illegible]

[illegible] आभासी

V वर्चुअल जल व्यापार

जल जीवन मिशन, अटल भू जल योजना, [illegible] प्रति बूंद अधिक फसल, हर खेत को पानी

PM पारंपरिक कृषि [illegible] योजना

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

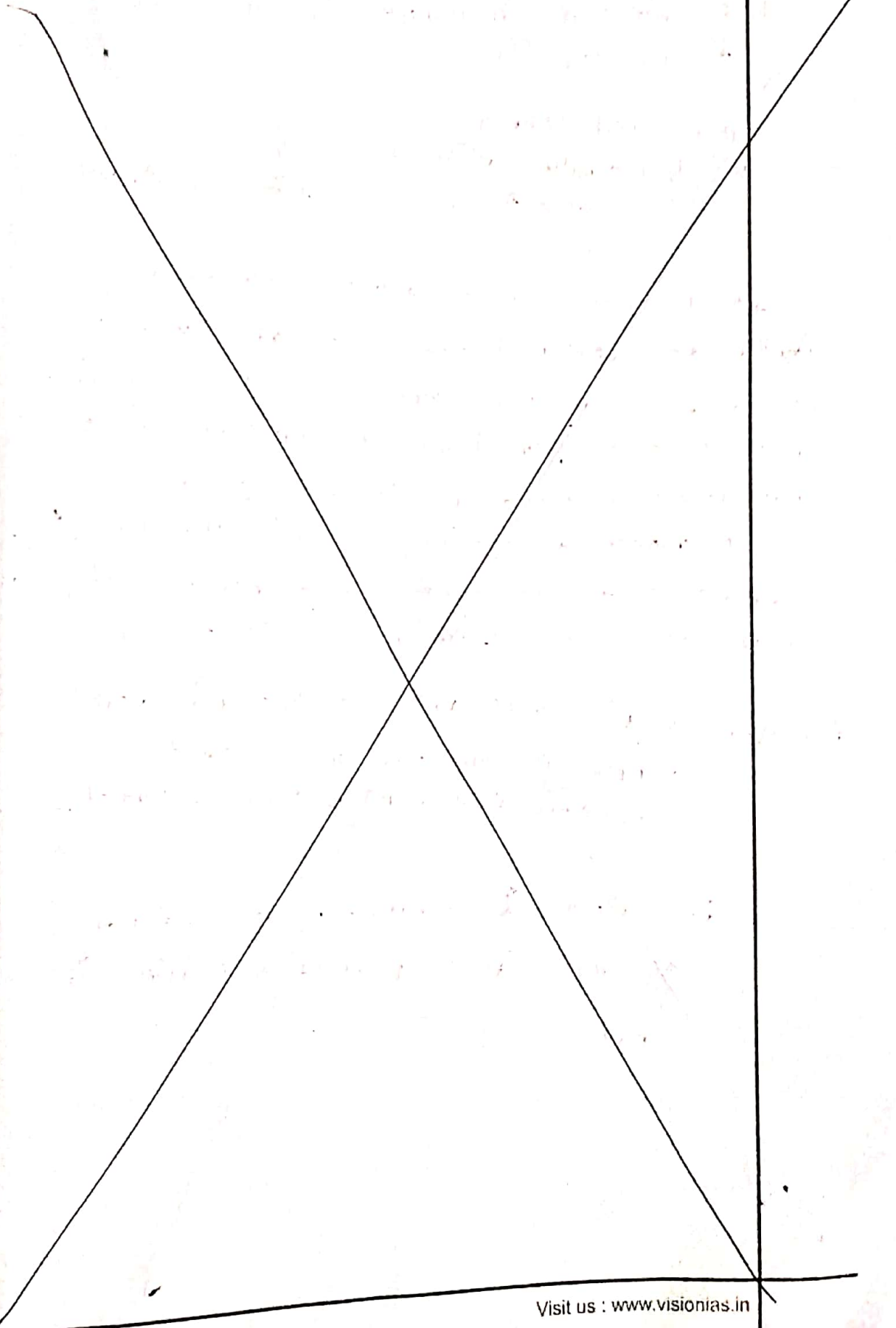

10:25

VISION IAS™

(A) → क्या हम वि-वैश्वीकरण के युग की ओर प्रवेश कर रहे हैं?

Exp → USA / China

(1) $ 200 billion dollar पर tariff

हाल ही में covid-19 से अन्तर्राष्ट्रीय

अध्ययन [illegible]

[illegible] विस्तार, [illegible] संभावना है, [illegible]

[illegible] वि-वैश्वीकरण [illegible]

प्रभाव हो सकते हैं, वि-वैश्वीकरण [illegible] बना हुआ है।

क्या हाल ही में [illegible] हानि [illegible]

वि विश्वकल के [illegible] etc

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर [illegible] UNEP, UNDP, WCO,

WTO; UNSC; UN; [illegible]

विश्वीकरण → भारत के हाल ही [illegible] icedesh, [illegible]

TAPI परियोजना, [illegible] (नेपाल);

द० पू० एशिया संबंध (ASEAN), FTA [illegible] etc.

कौन कहता है आसमान में सुराख नहीं होता

एक पत्थर तो जरा तबियत से उछालो यारो

M.C